शुक्र ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित शुक्र ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय शुक्रवार के दिन सूर्योदयकाल से आरम्भ करना चाहिये। शुक्र ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, दक्षिण पूर्व दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शुक्रवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। शुक्र ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए शुक्र ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी गूलर या आम की समिधा से करना चाहिए।

वैदिक मंत्र

ऊँ अन्नात्परिस्त्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

दैत्यानां गुरूः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः।

दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्र कमण्डलुः।।

शुक्र ग्रह का गायत्री मंत्र

ऊँ भृगुसुताय विद्महे

असुराचार्याय धीमहि।

तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

ऊँ श्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ शुं शुक्राय नमः।

श्री यदुनाथ शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से सूर्योदयकाल के समय करना चाहिये।